मधुबन ओम् शान्ति अंक 378 जनवरी 2024

पत्र-पुष्प

Happy New Year - 2024

"अव्यक्ति साइलेन्स में रह डबल लाइट फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो"

(दादी जी 21-12-2023)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा आवाज की दुनिया से परे रह, श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा सारी कारोबार चलाने वाले, अपनी डबल लाइट फरिश्ता स्थिति द्वारा इस साकार वतन को अव्यक्त वतन बनाने वाले सभी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नये वर्ष की, नये युग के आगमन की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां,

बाबा कहते बच्चे - सदा नये उमंग-उत्साह से उड़ती कला में उड़ते, नवीनता सम्पन्न तीव्र पुरुषार्थ द्वारा सम्पन्नता और सम्पूर्णता की समीपता का अनुभव करो। अपने स्वमान में रहो और सर्व को सम्मान दो। अपनी स्व-स्थिति से परिस्थितियों को पार करो। अब हर एक के पास दुआओं का स्टॉक और पुण्य की पूंजी जमा होनी चाहिए, इसके लिए अनेक जिम्मेवारियां सम्भालते हुए कर्तापन के भान से मुक्त, करावनहार की स्मृति बनी रहे, कभी सेवाओं में मैं पन न आये। अब समय है आवाज की दुनिया से दूर रह अन्तर्मुखी बन, डीप साइलेन्स द्वारा अव्यक्त स्थिति बनाने का।

यह जनवरी मास हम सबके अति प्रिय प्यारे ब्रह्मा बाबा की सम्पन्नता और सम्पूर्णता का मास है, हर वर्ष पूरा ही मास सभी ब्रह्मा वत्स अव्यक्त वतन की सैर करते हैं। तो इस वर्ष भी हर एक को लक्ष्य रख रोज़ कम से कम 8 घण्टे की तपस्या जरूर करनी है, मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ाना है।

बापदादा हम बच्चों को अन्तिम सेवा का स्वरूप बताते हुए पुरुषार्थ का विशेष इशारा दे रहे हैं कि बच्चे, अब डीप साइलेन्स, स्वीट साइलेन्स में रह लाइट-माइट हाउस बनो। एक सेकण्ड में अशरीरी बनने का ऐसा अभ्यास हो, जो किसी को भी आपका यह शरीर दिखाई न दे। अभी आप बच्चों को अपने श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा इशारों से पूरी कारोबार चलानी है। इसी लक्ष्य से जनवरी मास में विशेष साइलेन्स की अनुभूति करने तथा ब्रह्मा बाप समान डबल लाइट फरिश्ता बनने के पुरूषार्थ की प्वाइंटस आपके पास भेजी जा रही हैं।

तो जरूर आप सभी विशेष अटेन्शन रख रोज़ एकान्त में बैठ अव्यक्ति साइलेन्स का अनुभव करें तथा पूरा ही दिन डबल लाइट फरिश्ता स्थिति में रह अपने श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा इशारों से कारोबार करके अपने सेवास्थानों को सूक्ष्मवतन बनायें। बीच-बीच में आपस में मिलकर अव्यक्ति अनुभवों की लेन-देन भी अवश्य करें। हम सबकी यह डबल लाइट स्थिति तथा साइलेन्स की गहरी अनुभूति ही परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी।

बाकी मधुबन बेहद घर में बाबा के नये पुराने अनेकानेक बच्चे देश विदेश से आते रहते हैं। सभी ज्ञान योग की पालना लेकर स्वयं को सर्वशक्तियों से भरपूर कर रहे हैं। अनुभव युक्त क्लासेज़ तथा अव्यक्ति महावाक्यों को सुनकर सभी खूब रिफ्रेश होकर जाते हैं। मधुबन के सभी स्थानों पर बहुत अच्छी फरिश्तों की रिमझिम लगी हुई हैं। ठण्डी-ठण्डी शीतल हवायें भी सबको आनंदित कर रही हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद और नये वर्ष की नवींनता सम्पन्न मुबारक।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

"अव्यक्ति साइलेन्स द्वारा डबल लाइट फरिश्ता स्थिति का अनुभव करो"

1) संगमयुग की विशेष शक्ति साइलेन्स की शक्ति है, साइलेन्स में रहने से डबल लाइट फरिश्ता स्थिति सहज बन जाती है। इस स्थिति में कोई भी कार्य का बोझ नहीं रहता, इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल करते रहो। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा, सदा डबल लाइट रहे। साइलेन्स की स्थिति द्वारा सेकण्ड में बच्चों को नज़र से निहाल किया। ऐसे फालो फादर करो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे।

2) अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो कि मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ, चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। डीप साइलेन्स द्वारा अशरीरीपन का अभ्यास करो। सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार-स्वभाव में डबल लाइट रहो।

3) साइलेन्स अर्थात् शान्त स्वरूप आत्मा, जब एकान्त में रहती है तब मन बुद्धि की एकाग्रता का अनुभव होता है, उसी एकाग्रता से विशेष दो शक्तियां प्राप्त होती हैं - एक परखने की और दूसरी निर्णय करने की यही दो विशेष शक्तियां व्यवहार और परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं को हल कर देती है, इससे सहज ही डबल लाइट फरिश्ता स्थिति बन जाती है।

4) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म से मुक्त बनो। व्यर्थ वा निगेटिव - यही बोझ सदाकाल के लिए डीप साइलेन्स का अनुभव करने नहीं देता। अब व्यर्थ बोझ से सदा हल्के बन डबल लाइट फरिश्ता बनो।

5) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए अभी-अभी आवाज में आते, डिस्कस करते, कैसे भी वातावरण में रहते सेकण्ड में सर्व संकल्पों को स्टॉप कर आवाज से परे, न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात् आवाज से परे अव्यक्ति साइलेन्स की अनुभूति। यही अभ्यास लास्ट पेपर में विजयी बनायेगा।

6) जैसे ब्रह्मा बाप को चलता-फिरता फरिश्ता, देहभान रहित अनुभव किया। कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारा, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई, ऐसे फालो फादर करो। सदा देह-भान से न्यारे रहो, हर एक को न्यारा रूप दिखाई दे, इसको कहा जाता है देह में रहते फरिश्ता स्थिति।

7) हर बात में वृत्ति में, दृष्टि में, कर्म में न्यारापन अनुभव हो, यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, प्यारा-प्यारा लगता है। आत्मिक प्यारा। नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन परमधाम में चलना है, तो मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो, ऑर्डर से मन को चलाओ।

8) अभी आपकी सारी कारोबार श्रेष्ठ संकल्प द्वारा इशारों से चलनी चाहिए। ऐसे लाइट रूप में रहो जो व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय समाप्त हो जाए, वही संकल्प उठे जो होना है और जिसको करना है उनकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठे कि यही करना है, तब यह साकार वतन सूक्ष्मवतन बनेगा।

9) पहले अपनी देह के लगाव को खत्म करो तो सम्बन्ध और पदार्थ से लगाव आपेही खत्म हो जायेगा। फरिश्ता बनने के लिए पहले यह अभ्यास करो कि यह देह सेवा अर्थ है, अमानत है, मैं ट्रस्टी हूँ। फिर देखो फरिश्ता बनना कितना सहज लगता है।

10) मेरा तो एक बाबा और मेरा सब कुछ इस एक मेरे में समा जाए। तो एकाग्रता की शक्ति अव्यक्त फरिश्ता स्थिति का सहज अनुभव करायेगी। जहाँ चाहो, जैसे चाहो, जितना समय चाहो उतना समय मन एकाग्र हो जाए, इसको कहा जाता है मन वश में है। इस एकाग्रता अर्थात् एकरस स्वीट साइलेन्स की स्थिति द्वारा सहज ही डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति होती है।

11) ब्रह्मा बाप से प्यार है तो अब ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बनो। सदैव अपना लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे, अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं।

12) किसी भी कार्य में नवीनता की इनवेशन के लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है। चाहे लौकिक दुनिया की इन्वेन्शन हो, चाहे आध्यात्मिक इन्वेन्शन हो। एकाग्रता अर्थात् एक ही संकल्प में टिक जाना। एक ही लगन में मगन हो जाना। अपनी शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित हो जाना, इससे बुद्धि का भटकना सहज ही छूट जायेगा। देह और देह की दुनिया सहज भूल जायेगी और डबल लाइट फरिश्ता स्थिति का अनुभव होने लगेगा।

13) जैसे जब कोई ऐसा दिन होता है तो चलते-फिरते ट्रैफिक

को भी रोक कर तीन मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। चलते हुए सभी कार्यों को स्टॉप कर लेते हैं। ऐसे आप भी कोई कार्य करते हो या बात करते हो तो बीच-बीच में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच में रोक कर अपने फरिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ।

14) जैसे साकार रूप में एक ड्रेस चेन्ज कर दूसरी ड्रेस धारण करते हो, ऐसे साकार स्वरूप की स्मृति को छोड़ आकारी फरिश्ता स्वरूप बन जाओ। फरिश्तेपन की ड्रेस सेकेण्ड में धारण कर लो। यह अभ्यास बहुत समय से चाहिए तब अन्त समय में पास हो सकेंगे।

15) वरदानी रूप से सेवा करने के लिए पहले स्वयं में शुद्ध संकल्प धारण करो। सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सागर में लहराते रहो और जिस समय चाहे शुद्ध संकल्पों के सागर के तले में जाकर साइलेन्स स्वरूप हो जाओ। आपकी यह डीप साइलेन्स स्थिति वायुमण्डल का परिवर्तन कर देगी और आप स्वयं को डबल लाइट फरिश्ता अनुभव करेंगे।

16) अब अपने दिल की शुभ भावनायें अन्य आत्माओं तक पहुंचाओ। साइलेन्स की शक्ति को प्रत्यक्ष करो। हर एक ब्राह्मण बच्चे में यह साइलेन्स की शक्ति है। सिर्फ इस शक्ति को मन से, तन से इमर्ज करो। एक सेकण्ड में मन के संकल्पों को एकाग्र कर लो तब फरिश्ते रूप द्वारा वायुमण्डल में साइलेन्स की शक्ति के प्रकम्पन्न फैल सकेंगे।

17) जैसे शुरू-शुरू में अभ्यास करते थे - चल रहे हैं लेकिन स्थिति ऐसे जो दूसरे समझते कि यह कोई लाइट जा रही है, उनको शरीर दिखाई नहीं देता था, इसी अभ्यास से हर प्रकार के पेपर में पास हुए। तो अभी जबकि समय बहुत खराब आ रहा है तो डबल लाइट रहने का अभ्यास बढ़ाओ। दूसरों को सदैव आपका लाइट रूप दिखाई दे - यही सेफ्टी है। अन्दर आवे और लाइट का किला देखे।

18) सदा यही लक्ष्य याद रहे कि हमें बाप समान बनना है तो जैसे बाप लाइट है वैसे डबल लाइट। औरों को देखते हो तो कमजोर होते हो इसलिए सी फादर, फालो फादर करो। उड़ती कला का श्रेष्ठ साधन सिर्फ एक शब्द है - सब कुछ तेरा। मेरा शब्द बदल तेरा कर दो। तेरा हूँ, तो आत्मा लाइट है और जब सब कुछ तेरा है तो लाइट (हल्के) बन गये।

19) जैसे लाइट के कनेक्शन से बड़ी-बड़ी मशीनरी चलती है। आप सभी हर कर्म करते कनेक्शन के आधार से स्वयं भी डबल लाइट बन चलते रहो। जहाँ डबल लाइट की स्थिति है, वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है। अपने-पन को समाप्त कर ट्रस्टीपन का भाव और ईश्वरीय सेवा की भावना हो तो डबल लाइट बन जायेंगे।

20) कोई भी आपके समीप सम्पर्क में आये तो महसूस करे कि यह रूहानी हैं, अलौकिक हैं। अपने पूर्वजपन की स्मृति से सभी आत्माओं की पालना शान्ति की शक्ति से करो। आपका फर्ज है - अशान्ति के वायुमण्डल में आत्माओं को शान्ति का दान देकर उनमें शान्ति की, सहनशक्ति की हिम्मत भरना। इसके लिए अपनी वृत्ति द्वारा, मन्सा शक्ति द्वारा विशेष सेवा करो। लाइट-हाउस बन सर्व को शान्ति की लाइट दो।

21) डबल जिम्मेवारी होते भी डबल लाइट रहो। डबल लाइट रहने से लौकिक जिम्मेवारी कभी थकायेगी नहीं क्योंकि ट्रस्टी हो। ट्रस्टी को क्या थकावट! अपनी गृहस्थी, अपनी प्रवृत्ति समझेंगे तो बोझ है। अपना है ही नहीं तो बोझ किस बात का बिल्कुल न्यारे और प्यारे, बालक सो मालिक।

22) सदा खुशी में झूलने वाले सर्व के विघ्न हर्ता वा सर्व की मुश्किल को सहज करने वाले तब बनेंगे जब संकल्पों में दृढ़ता होगी और स्थिति में डबल लाइट होंगे। मेरा कुछ नहीं, सब कुछ बाप का है। जब बोझ अपने ऊपर रखते हो तब सब प्रकार के विघ्न आते हैं। मेरा नहीं तो निर्विघ्न।

23) सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते चलो। जितना सेवा में हल्कापन होगा उतना सहज उड़ेंगे, उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना, यही सफलता का आधार है। कितना भी आवाज और कितना भी तमोगुणी वातावरण हो लेकिन साइलेन्स की शक्ति से वेस्ट (व्यर्थ) समाप्त होने के कारण बेस्ट (श्रेष्ठ) स्थिति में स्थित होने से सदा रेस्ट (आराम) का अनुभव कर सकेंगे।

24) जिम्मेवारी को निभाना यह भी आवश्यक है लेकिन जितनी बड़ी जिम्मेवारी उतना ही डबल लाइट। जिम्मेवारी निभाते हुए जिम्मेवारी के बोझ से न्यारे रहो, इसको कहते हैं बाप का प्यारा। घबराओ नहीं क्या करूँ, बहुत जिम्मेवारी है। यह करुँ वा नहीं यह तो बड़ा मुश्किल है। यह महसूसता अर्थात् बोझ है। डबल लाइट अर्थात् इससे भी न्यारा। कोई भी जिम्मेवारी के कर्म की हलचल का बोझ न हो।

25) सदा डबल लाइट स्थिति में रहने वाले निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त होंगे। उड़ती कला में रहेंगे। उड़ती कला अर्थात् ऊचे से ऊंची स्थिति। उनके बुद्धि रूपी पाँव धरनी पर नहीं। धरनी अर्थात् देह भान से ऊपर। जो देह भान की धरनी से ऊपर रहते हैं, वह सदा फरिश्ते हैं। उनके सम्पर्क में जो भी आत्मा आयेगी वह थोडे समय में भी शीतलता व शान्ति की अनुभूति करेगी।

26) अब डबल लाइट बन दिव्य बुद्धि रूपी विमान द्वारा सबसे ऊंची चोटी की स्थिति में स्थित हो विश्व की सर्व आत्माओं

के प्रति लाइट और माइट की शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के सहयोग की लहर फैलाओ। इस विमान में बापदादा की रिफाइन श्रेष्ठ मत का साधन (पेट्रोल) हो। उसमें जरा भी मन-मत, परमत का किचड़ा न हो।

27) अब हर एक ब्राह्मण ब्रह्मा बाप समान चैतन्य चित्र बनें। लाइट और माइट हाउस की झांकी बनें। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार कर कर्मातीत डबल लाइट फरिश्ता स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाये, तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। उस कर्मातीत स्टेज के आधार पर जिसके प्रति संकल्प करेंगे उसके पास वह संकल्प पहुंच जायेगा।

28) करन-करावनहार बाप है, कराने वाला सब कुछ करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहा हूँ, इस स्मृति से कर्तापन के भान को समाप्त कर न्यारे और प्यारे बनो। सब बोझ बाप के आगे समर्पित कर अपने अनादि स्वरूप की स्मृति से अनादि स्वभाव-संस्कार धारण कर डबल लाइट स्थिति का अनुभव करो।

29) जैसे साइंस वाले रेत में भी अनाज पैदा कर देते हैं, ऐसे आप साइलेन्स द्वारा धरनी का परिवर्तन करो, इसके लिए शुभ भावना सम्पन्न बनो। ब्रह्मा बाप को फालो करो। साइलेन्स की शक्ति से किसी भी आत्मा की वृत्ति दृष्टि का परिवर्तन कर दो। जैसे क्रोध अज्ञान की शक्ति है, ऐसे ज्ञान की शक्ति शान्ति है, सहनशक्ति है, अभी इन गुणों को अपना संस्कार बना लो तो डबल लाइट फरिश्ता सहज बन जायेंगे।

30) जैसे अन्तरिक्ष यान वाले ऊंचे होने के कारण सारे पृथ्वी के जहाँ के भी चित्र खींचने चाहें खींच सकते हैं, ऐसे साइलेन्स की शक्ति से अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर साइलेन्स की गहरी अनुभूति करो, यह अनुभूति डबल लाइट फरिश्ता बना देगी।

31) जितना-जितना आप अन्तर्मुखी स्वीट साइलेन्स स्वरूप में स्थित होते जायेंगे, उतना नयनों की भाषा, भावना की भाषा और संकल्पों की भाषा को सहज समझ सकेंगे, यही भाषा रूहानी योगी जीवन की भाषा है। आपकी साइलेन्स पावर साइंस से भी ऊंची है। जैसे साइंस प्रत्यक्ष प्रूफ दिखाती है, वैसे साइलेन्स पावर का प्रैक्टिकल प्रूफ है आप सबकी डबल लाइट फरिश्ता जीवन। जब इतने सब प्रैक्टिकल प्रूफ दिखाई देंगे तब न चाहते भी सभी की नज़र जायेगी और जयजयकार का नारा लगेगा।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 14-12-08 *मधुबन*

"सदा खुशनसीब वह हैं जिनके मन में सदा खुशी की डांस चलती है, जो माया से मुक्त हैं"

(गुल्जार दादी जी)

ओम् शान्ति का यह शब्द भी बाबा की ओर से बहुत अच्छी सौगात है। जब हम अर्थ सहित उस स्वरूप में टिक करके ओम् शान्ति कहते हैं तो समस्या बदलके समाधान हो जाती है। यह शिव मंत्र बहुत काम देता है लेकिन सिर्फ शर्त है कि उस अर्थ स्वरूप में अपना मन लगायें क्योंकि मन में ही समस्या आती है तो मन अगर ओम् शान्ति के अर्थ स्वरूप में टिक जाता है तो मन बदल जाता है। ऐसे नहीं राम राम कहते, मरा मरा हो जाए.. ऐसा नहीं, लेकिन अर्थ से अगर हम ओम् शान्ति कहते हैं तो अशान्ति फौरन भाग जाती है। तो आप सभी ओम् शान्ति का मंत्र समय पर काम में लगाते हो? ओम् शान्ति कहा और अशान्ति चली गयी, किसी का यह अनुभव है? ओम् शान्ति कहने मात्र से अगर आप माया से मुक्त हो गये तो बहुत खुशी और मौज में रहेंगे। सदा खिले हुए रूहे गुलाब, सदा खुश रहेंगे।

कलियुग का अर्थ है कलह कलेष का समय, ऐसे समय पर इस शिव मंत्र के अर्थ स्वरूप में टिक जायें, यह है बड़ी बात। समस्या के समय इसमें टिक जायेंगे, शुभ संकल्प से सोचेंगे तो समस्या का रूप बदल जायेगा। तो शिवबाबा के इस महामंत्र को काम में लाओ। शिवबाबा से प्राप्त शक्तियों के आधार से ही मन को वश कर सकते हैं। हम मालिक हैं तो हमारा मन कायदे से चलेगा, बुद्धि ठीक काम करेगी, संस्कारों में सुधार होता रहेगा। तो मन को अपने ऑर्डर में रखने के लिए बाबा कहते हैं कि सदा बाप को याद करते रहेंगे तो बाप से शक्तियाँ मिलेंगी, उन शक्तियों के आगे मन अपनी मनमानी नहीं कर सकता है। तो एक बाबा ही याद हो बस और कोई बात याद न हो। दूसरा हर कर्म (सेवा) श्रीमत प्रमाण करो, मन उसमें बिजी रहेगा तो व्यर्थ आयेगा ही नहीं। कर्मयोगी बनके कर्म करो, क्योंकि बाबा की याद में कोई भी कार्य करेंगे तो उसमें सहज सफलता मिलती है और मन हल्का रहता है।

सारे दिन में बीच-बीच में यह चेक करो कि हम सोल कॉन्सेस हैं? बाबा जो जो युक्तियाँ बताते हैं, उसे अपनाते पुरुषार्थ में आगे बढ़ने का अनुभव हो रहा है? यहाँ मधुबन में निरन्तर योग में रहने का अभ्यास बहुत अच्छा कर सकते हैं क्योंकि और तो कोई काम नहीं है। बाबा, बाबा और तो कुछ है ही नहीं इसलिए यहाँ आप पूरा मनमनाभव का अनुभव कर सकते हो। मन बाबा में ही लगा रहे। सारा दिन मन में सदा खुशी की डांस चलती रहे तब कहेंगे खुशनसीब। तो कितना श्रेष्ठ भाग्य है जो फ्री हो योग में आकर बैठते हैं, ब्रह्माभोजन खाते हैं। तो आप यहाँ अपने योग की स्टेज बहुत अच्छी बना सकते हो। और बातों में जाओ ही नहीं, और बातें यहाँ करना ही नहीं चाहिए। क्यों, क्या में जाने की जरुरत नहीं है, बस बाबा और मैं। बाबा ही मेरा संसार है और कोई है ही नहीं, यह अनुभव आप यहाँ बहुत सहज कर सकते हो। बाबा के याद की शक्ति बढ़ाने का चांस यहाँ मिलता है, इस लॉटरी का लाभ लेके जाओ। अपने में खुशी का खज़ाना भरके जाओ, जो लक्ष्य रखा है, उसे प्राप्त करके जाना है। जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण। लक्ष्य और लक्षण में जो कमी है, उसे यहाँ छोड़के जाओ, यहाँ बाबा ले लेगा। सच्ची दिल से प्यार से अपना हक समझके बाबा को अपनी कमी कमजोरी देके जाओ तो बाबा ले लेगा। अपना चेहरा खुश्क नहीं, खुश रखना चाहिए। इतना भाग्य मिला है तो हम मुस्करायेंगे नहीं तो कौन मुस्करायेंगे? सदा हर्षित रहना, सदा सन्तुष्ट रहने का खज़ाना अपने में यहाँ भरके जाना। अच्छा।

"ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध में आते, जिम्मेवारी सम्भालते पवित्रता, सत्यता और दिव्यता सदा कायम रहे, संकल्प मात्र भी अन्दर कोई अशुद्धि ना हो"

(दादी जानकी 14-07-06)

ओम् शान्ति के महान मंत्र से कितने फायदे हैं। यह मंत्र बाबा की याद दिलाता है, स्वधर्म की याद दिलाता है, घर की याद दिलाता है, ड्रामा की हर सीन को देखते हुए ओम् शान्ति। चारों बातों में कमाल है ओम् शान्ति की। यह संगमयुग धर्माऊ युग है, धर्मात्मा बनने के लिए युग है, इसमें हमारे कर्म श्रेष्ठ, धर्म श्रेष्ठ हो।

पहले मैं स्वयं को देखूँ फिर औरों को देखूँ। अन्दर अपने को देखने से तीसरा नेत्र खुला। जब तक अपने को नहीं देखा, नहीं जाना तो मेरा तीसरा नेत्र अभी खुला नहीं है। पहले रजो में किसके अवगुण देखते थे। अभी बुद्धि चेन्ज हुई सतोगुणी बनी। पर अन्तर में आत्मा जो अति सूक्ष्म है, अपने आपको जानू, देखूँ। पहले मैं अपने को आत्मा देखूँ। आत्मा में मन बुद्धि संस्कार हैं। आगे कहते थे स्थूल, सूक्ष्म, मूल। जब आत्मा को जाना तो मन को पूछते हैं कहाँ हो तुम। बाबा की दृष्टि से आत्मा समझने लगती है मैं शान्त हूँ। भगवान निज आत्मा को ज्ञान दे रहा है। सम्पूर्ण पवित्रता को जीवन में लाने वाली मैं आत्मा हूँ। कार्य व्यवहार छोड़कर हम प्रैक्टिस नहीं कर सकते। अभी कार्य व्यवहार तो पहले से भी ज्यादा है। पहले जिम्मेवारी ज्यादा नहीं थी। अब ईश्वरीय परिवार में आ गये तो जिम्मेवारी और बढ़ गयी, उसमें फिर पवित्रता हो, सत्यता हो तो लगेगा यह दिव्यता है। पवित्रता इतनी हो जो अशुद्ध संकल्प भी न आयें। अगर मेरे पास अशुद्ध संकल्प आया तो वह छोड़ेगा नहीं। जैसे मक्खी मच्छर पीछे घूमते बीमारी पैदा करते हैं। अशुद्ध माना निगेटिव। कहेंगे इतना नहीं है, थोड़ा है, फिर औरों से भेंट करेंगे या अपने पास्ट से भेंट करेंगे। पहले मेरा दर्पण साफ हो तो अपने आपही दिखाई पड़ेगा। पीछे भासना आयेगी, इन आँखों से दिखाई पड़ने वाली चीज़ मुझे नहीं दिखाई पड़ती। ये जो दिखाई पड़ता है वो मेरे काम का नहीं है। अन्तर साफ का सबूत है दिमाग साफ, अपने लिए चाहे सबके लिए। पहले संकल्प में मन को शान्त करो। यह बार-बार टी-टी करता है। बुद्धि में एकाग्रता की शक्ति को जमा करने के लिए मन बीच में टी-टी करता है। इधर की, उधर की, पराई, पुरानी बात। कहेंगे अशुद्ध नहीं है पर कॉमन है। तो छुट्टी दे दी ना। अगर अच्छी भावना से सोचते हैं तो भी व्यर्थ बहुत है। चलो अशुद्ध न हो पर व्यर्थ कितना है। या तो बड़े बनकर कहेंगे कि ये नहीं होना चाहिए या तो छोटे बनके कहेंगे बड़ों को यह नहीं करना चाहिए। ये जो बुद्धि का अभिमान है वो हमको पवित्र बनने नहीं देता है। यह रियलाइजेशन नहीं है, रियइलाजेशन में सच्चाई, समझ। रियलाइजेशन में पहले मुझे सच्चाई चाहिए। जिस घड़ी मैं अपने को देखता शुरू कर दूँ, तो परचिन्तन बन्द हो जायेगा। अगर परचिन्तन बीच में आया तो स्व-चिन्तन से लिंक बीच में टूट गयी या पास्ट चिन्तन बीच में आया तो स्व-चिन्तन रह गया। स्व-चिन्तन में परचिन्तन जिस घड़ी घुसता है या पास्ट की कोई बात आती है, उस घड़ी मेरी गति क्या है!

चिन्तन शुद्ध श्रेष्ठ हो, स्व को अन्दर से समझकर बाबा को सामने रखकर, जिस दृष्टि से बाबा देख रहा है, उसी दृष्टि से मैं देखूँ। बाकी यहाँ क्या हो रहा है उसको देखने की जरूरत ही नहीं है। जैसे साकार बाबा को देखा है। हम बच्चों को माँ-बाप के रूप में पालना दी है। शिवबाबा ने साकार बाबा के द्वारा माँ-बाप, सखा बनके कान में शिक्षा दी है, जो हर पल याद आती है, बाबा ने इशारा दिया है ये तुम नहीं कर सकती हो।

जैसे बाबा ने आदि से आदत डाली है, इशारों से समझाया ना! आवाज में क्यों आती है। जैसे बाबा की हैण्डलिंग पावर वण्डरफुल है, वो पत्थरबुद्धि को पारस बना देता है। श्रीमत में अगर मनमत मिक्स नहीं है तो न कभी पर का प्रभाव आयेगा, न घृणा आयेगी। हम इतने पवित्र बनें जो पावन पूज्य बनें। मुझे पूजा करानी नहीं है पर लायक तो बनूँ। धरती पर पाँव न हो, रॉयल्टी नहीं है। वायुमण्डल का असर कोई मेरे को न हो जाये। जब तक इधर-उधर देखने की आदत है, हू एम आय भूला हुआ है। इधर-उधर की सारी जानकारी बुद्धि में है। अगर इन्फारमेशन ही अन्दर डालते रहेंगे तो अपने को कब देखेंगे। बाबा से अन्दर कम्यूनिकेशन हो नहीं सकता। कनेक्शन हो तो कम्यूनिकेशन हो। जैसे बाबा की सर्व के प्रति कल्याण भावना है। अगर उस भावना में अन्तर है तो हमारी यह महानता नहीं है।

अगर सत्यता नहीं है तो साहेब राज़ी नहीं है। बातें तो आयेंगी पर हम पार हो जायें। कैसे हुए? अरे बाबा है ना। बाबा कहता था लम्बे हैं जीवन के रस्ते आओ चले हम गाते हंसते। बाबा कहे बेफिकर बादशाह रहो, अगर हमारी शक्ल फिकर वाली हो तो फालो फादर नहीं हैं। पवित्रता फालो फादर करने में मदद करती है। सपूत बनके सबूत देना है।

बाबा कहता था किसकी बातों में नहीं आना, न बातें सुनना, न सुनाना। इस चक्कर में आना ही नहीं है। हमें यह शिक्षायें मिली हैं। भगवान मेरे लिए क्या चाहता है, अन्दर इतनी सच्ची दिल हो, जो ईशारा वो करता है बच्ची तुम्हारा यह काम है। इसमें हम स्वतंत्र हैं यानि किसके दबाव, प्रभाव में आकर कोई काम न कर लें। मैं आत्मा इतनी फ्री रहूँ जो कोई कर्म के हिसाब-किताब के बीच में मैं न आ जाऊं।

कोई किसी की ग्लानि करता है तो उसे बन्द करा देना, बाबा के शब्द यही हैं। तो किसी को ताकत नहीं है कि यज्ञ की, ब्राह्मणों की ग्लानि में मेरे को शामिल कर ले। हमको जो करना है वही करना है। यज्ञ बाबा का है, यज्ञ का हम खाते हैं। इतना सुन्दर ब्राह्मण परिवार है। किसी के लिए मन में ग्लानि रखना या किसकी ग्लानि करना, उसको ब्राह्मण नहीं माना जाता है।

फिर आती है सम्पूर्ण पवित्रता की बात, मैं मुख से कुछ नहीं कहूँ, पर वो सामने आये तो ओम् शान्ति भी न कहूँ। अरे मुस्करा के ओम् शान्ति करो ना, क्या मैं इतना बिजी हूँ! अगर मेरी दृष्टि ऐसी है तो क्या मैं आत्मा शुद्ध आत्मा की लाइन में हूँ? मैं अपनी बात देखूँ, बाकी दूसरा कहाँ तक शुद्ध अशुद्ध है, ऐसे नहीं। गंगा कभी यह नहीं कहती है, ये पापी है। पापी का काम है उसमें टुबकी लगा के पावन बनना। बाबा ने कहा है तुम मेरे मस्तक से निकली हुई गंगा हो। तुम मेरे माथे की लाज़ रखना। मेरे दिल में जो होगा, दिमाग ऐसा ही चलेगा। दिमाग में होगा तो दिल में अन्दर से वही फीलिंग होगी। तो आत्मा अन्दर से अपने दिमाग और दिल को देखे।

हम साउण्ड में आते साइलेन्स में रहें। इससे सम्पूर्ण पवित्रता क्या है, अपने आप खुद को अनुभव होगा। सम्पूर्णता है ही निर्विकारी पन की। सोलह कला सम्पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, फिर सम्पूर्ण निर्विकारी। मेरे में कोई भी विकार की अंश न रहे। साइलेन्स में रहकर आवाज में आये, आवाज में आते संकल्प में थोड़ा भी अशुद्धि अंश मात्र भी न हो।

जो बात मेरे करने योग्य है वो तो मेरे को करनी ही पड़ेगी। फिर हिम्मत बच्चे की मदद बाप की, नियत साफ मुराद हांसिल, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। अगर मैं कोई भी बात में हिम्मत नहीं रखती हूँ तो जैसे बाबा का जो कान्ट्रेक्ट साइन किया हुआ है हिम्मत बच्चे की मदद बाप की वो मैं कैन्सिल कर रही हूँ। बाबा ने मेरे में आशायें रखी हैं, उम्मींदे रखी हैं, कहाँ से उठा के कहाँ बिठाया है। अभी अपने को नालायक बना के, यह ख्याल करके हिम्मत को छोड़ेंगे तो क्या हाल होगा! तो हम लोगों को इतना एलर्ट, एक्यूरेट रहना है। कई बाबा के बच्चों ने मदद के आधार से हिम्मत नहीं छोड़ी है। पर हिम्मत और मदद के बीच में सच्चाई चाहिए। हिम्मत कभी अकेला काम नहीं कर सकती। सच्चाई का बल बाबा को पकड़के रखता है। बाबा मुफ्त में नहीं देता है, पहले सच्चाई को टेस्ट करता है। सच्चाई के आधार से भले कितने भी उतराव चढ़ाव आयेंगे, दूसरा कोई मदद नहीं करेगा। स्वयं अपनी आत्म-अभिमानी सीट पर रहें तो बाबा मदद करता है, भले कोई न पूछे। सच्ची दिल है तो साहेब राज़ी है, परिवार मेरा है। कोई भी परिवार में ऐसा नहीं हो सकता है, जो मेरे को प्यार न करे। पर मेरे अन्दर प्यार नहीं है, यह प्यार का परवाह बल देता है। ज्ञान भी तभी अच्छा लगा है जब भगवान के लिए प्यार है, स्वयं के लिए प्यार है। अगर मेरे में हार्ट ही नहीं है तो हेड क्या काम करेगा! हार्ट, हेड, हैण्ड इस पर आधार है। जैसा दिल, दिमाग है, हाथ वैसा ही काम करेगा। अगर दिल दिलवाला के साथ है तो दिल कभी भारी नहीं होगी। दिल में दु:ख आयेगा नहीं। दु:ख

देने का भी ख्याल नहीं आयेगा। दु:ख देने का ख्याल आना भी अपवित्रता है। पवित्रता में सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं है। दृष्टि-वृत्ति एक बारी भी खराब हुई, उसमें चंचलता है तो वह हमें पवित्र बनने नहीं देगी। दृष्टि में हमारी रुहानियत, आत्मिक दृष्टि हो। एक बाबा के बच्चे हैं, किसके भी स्वभाव संस्कार वश मेरी दृष्टि में उसके लिए दुविधा आई या दु:ख महसूस हुआ। भले उसने मुझे धोखा दिया, उसका मुझे दु:ख हुआ, मेरी दृष्टि-वृत्ति बदल गयी। तो यह भी मेरी अपवित्रता हो गयी क्योंकि दु:ख, धोखाबाजी से बुद्धि दुविधा में आ जाती है। विश्वास अपने से या औरों से छूट जाता है।

भावना मेरी सदा शुद्ध श्रेष्ठ हो, विश्वास अटल हो। अच्छा ही होगा, हुआ ही पड़ा है। जो मीठे बाबा ने कहा, बच्ची हो जायेगा। अन्दर से और कोई आवाज आये ही नहीं। कैसे होगा? मुख के लड्डू थोड़ेही खाना है। अन्दर विश्वास का जो आवाज है, उसको मैं क्यों छोड़ूं। ड्रामा में हुआ पड़ा है, कराने वाला बाबा बैठा है। मुझे अपनी भावना को सच्चा रखना, मेरा काम है। जो होगा मैं राज़ी हूँ।

निश्चय में कभी खलल न पड़े, संशय न आये, स्वयं में, चाहे बाप में, चाहे ड्रामा में। जरा सा भी संशय आया, तो आत्मा का जो भाग्य है, निश्चय के बल से विजय पाये, वह नहीं हो सकती। पूरे विश्व में सेवायें हो रही हैं, कोई आत्मा नहीं कर रही है। परन्तु आत्मा का भाग्य है सिर्फ निश्चय रखा। भाग्य विधाता ने उसको निश्चय से निमित्त बना लिया। निश्चय का बल है सेवा का फल है। हमने क्या किया! सिर्फ पवित्रता हमारे संकल्प, वाणी, कर्म और सम्बन्ध में हो। संकल्प को शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ और दृढ़ बनाओ। संकल्प शुद्ध हैं, उसमें शुभ भावना है, श्रेष्ठ हैं तो कुछ अच्छा होने वाला है, हुआ ही पड़ा है। फिर आजकल बाबा कहते हैं दृढ़ संकल्प रखो, औरों को भी उमंग-उत्साह में लाओ, औरों को भाग्य बनाने का संकल्प आये।

सम्पूर्ण पवित्रता में अशुद्ध बातों का अशुद्ध छींटा भी नहीं पड़ सकता है। पवित्रता की इतनी वैल्यू है तो सब वैल्यू हमारे में आ जायेंगी। सर्व गुण आ जायेंगे। मेरे में कोई अवगुण न रहे, मैं किसी का अवगुण चित्त पर न रखूँ। एकाग्रता की शक्ति से चित्त मेरा साफ हो। सच्चाई को अगर कभी छोड़ा नहीं तो साहेब राज़ी रहेगा। फिर धर्मराज की आंख नहीं देखेंगे। सदा ही याद है - सत-धर्म मेरा सच्चाई है, कारोबार में ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी देखना है तो बाबा को देखो। हमारे बोल, चाल, व्यवहार से हर एक माने कि ये लोग बरोबर सतयुग स्थापन कर रहे हैं। दुनिया का फ्यूचर क्या है यह हमारे से दिखाई पड़े। साक्षात्कार भी हो, आवाज भी फैले, उनको अनुभव हो। यह है सम्पूर्ण पवित्रता। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"अनेक प्रकार के विघ्नों से पार होने की युक्तियां"

1) हम सभी अलौकिक बाप के बच्चे दुनिया से निराले हैं। पारलौकिक और अलौकिक बापदादा हमें यही पाठ पढ़ाते - तुम भाई-भाई व भाई-बहन हो तो खुद को यह समझते हो कि दुनिया से हम अलौकिक हैं? खुद का नशा हमें क्या रहता? लौकिक हैं या अलौकिक हैं? दुनिया से निराले हैं? जब हम निराले हैं तो दुनिया से कोई प्रीत है? आकर्षण है? दुनिया में कोई भी बच्चा नहीं जो सोचे मैं बहुत बड़ी अथॉरिटी का बच्चा हूँ, हम तो वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं, बाबा ने हमें बहुत बड़ी अथॉरिटी दी है।

2) कोई-कोई कहते हैं हमारी जीवन में यह-यह विघ्न आते हैं। मैं कहती यह दुनिया है ही विघ्नों की। दुनिया माना ही कदम-कदम में विघ्न। जहाँ चलो वहाँ विघ्न ही विघ्न हैं। है ही कांटों का जंगल तो जहाँ चलेंगे वहां कांटा ही लगेगा। कोई कहते यह बड़े सहयोगी हैं, भल सहयोगी हैं लेकिन बाबा को नहीं जानते। तो वह सहयोग देते भी कई रूप से विघ्न रूप बनते हैं। चाहे कोई ज्ञान के खिलाफ बोलेगा, कोई कहेगा मैं तुम्हारे उद्देश्य को नहीं मानता। तुम्हारे भाई-बहन के नाते को नहीं मानता। तुम्हारी नीति को नहीं मानता। न मानना ही माना हमारे लिए कोई न कोई विघ्न है। चाहे अपने मां-बाप हों, चाहे दोस्त हों, चाहे व्यवहार में कोई हो। सब विघ्न रूप बन जाते हैं। कहेंगे अगर तुम ज्ञान में चलोगे तो नौकरी नहीं देंगे। तो विघ्न अनेक हैं।

3) अगर मैं सोचती रहूँ विघ्न आया – मैं क्या करूं! कईयों के दिल में आता है कि क्या ज्ञान लिया और ही मुसीबत पाई। ज्ञान शान्ति के लिए लिया लेकिन और ही टक्करें खानी पड़ती, सांस ही नहीं लेने देते। अब इसका जवाब क्या है? मैं कहती विघ्न आना इस संसार का नियम है। विघ्नों को विनाश करना मुझ असंसारी का नियम है। संसार के नियम को खुद का

नियम नहीं समझो। संसार की रीति है टक्कर देना, विघ्न डालना, ग्लानि करना, गाली देना, विरोध करना, वैरी बनना... लेकिन हमें संसार की रीति को, संसार के नियम को खुद का नियम नहीं समझना है। मैं तो असंसारी हूँ क्योंकि मैं अलौकिक की बच्ची हूँ, वह संसार से निराला है।

4) ब्राह्मण कुल में भी कोई-कोई एक दो के लिए विघ्न रूप बन पड़ते हैं। अगर आज मेरी कोई महिमा करते तो कल गाली भी दे सकते। आगे बढ़ता देखेंगे तो ईर्ष्या करेंगे, आगे नहीं बढ़ेगे तो ग्लानि करेंगे, कहेंगे यह तो है ही जैसे बुद्धू। हसूंगी तो कहेंगे चंचल है, चुप रहूँगी तो कहेंगे बुद्धू है। अगर सेन्टर पर काम करूंगी तो कहेंगे सारा दिन सेन्टर ही याद आता, घरबार कुछ नहीं। अगर नहीं करूंगी तो कहेंगे यज्ञ स्नेही थोड़ेही है। अगर अपना तन-मन-धन सफल करेंगे तो कहेंगे कुछ तो फ्यूचर का भी सोचना चाहिए। अगर नहीं करेंगे तो कहेंगे मनहूस है। अगर ज्ञान के नशे में सब कुछ भूले हुए होंगे तो कहेंगे इतना नशा थोड़ेही होना चाहिए। अगर नशा नहीं तो कहेंगे इसको तो बाबा पर निश्चय ही नहीं है।

5) दोनों तरफ मुश्किल ही मुश्किल है। सिन्धी में कहावत है.... चक्की का पुर नीचे का उठाओ तो भी भारी, ऊपर का उठाओ तो भी भारी। नहीं उठायेंगे तो पीस जायेंगे। अगर सिम्पुल रहते तो कहेंगे यह संन्यासी बन गया। अगर ठीक-ठाक रहो तो कहेंगे इसे वैराग्य ही नहीं आया। आखिर क्या करूं! कभी बाबा भी मुरली में कहता क्या नौकरी टोकरी करनी है, अगर नहीं करते तो कोई पूछता नहीं। अगर सीरियस रहते तो कहेंगे यह तो बहुत सीरियस है, अगर हल्के होकर रहते तो कहेंगे मर्यादा सीखो। अगर बहन की मानता हूँ तो कहेंगे यह तो इनकी ही मानता है, अगर नहीं मानता तो कहेंगे यह तो मनमौजी है। यह मानने वाला थोड़ेही है। ऐसे अनेक प्रकार की बातें डेली दिनचर्या में आती हैं। मैं उसमें क्या करूं! अगर इस बहन की सुनता तो दूसरी को एतराज होता, बड़ी की सुनता तो छोटी नाराज़। छोटी की सुनता तो बड़ी डाँटती। आखिर भी मैं क्या करूं! यह सभी के सवाल हैं – जो सदा से ही चले आते हैं। जीवन भी एक नईया है, इसको चलाना होशियार मांझी (खिवैया) का काम है। इसके लिए पहली बात हमेशा समझो – जितना रुस्तम बनेंगे उतना रावण रुस्तम बनेगा। रावण क्या-क्या करता, आप उसकी सौ-सौ बातें लिखो। कभी कुदृष्टि लायेगा, कभी संस्कारों की टक्कर में लायेगा, कभी ईर्ष्या में, कभी मेरे पन में, कभी जोश में उसकी 100 बातें कम से कम हैं। लेकिन हमें उसे सेन्ट परसेन्ट जीतना है। अब यहाँ चाहिए हमारी बारीक बुद्धि। अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म बुद्धि। उसके लिए हमारे सामने है श्रीमत। बाबा श्रीमत के जितने भी इशारे देता है वह सब हमारे सामने क्लीयर आइने में होने चाहिए। उसी पर अपने को चलाओ।

6) हमें बाबा कहता - तुम्हें पावन बनना है माना सतोप्रधान बनना है। तो पहले-पहले अपने को देखो हम बिल्कुल ही तमो थे, हमें सतो में आना है। मैं सत्व गुण में कहाँ तक दृढ़ होती जा रही हूँ। अपनी सत-बुद्धि से, अपनी शीतलता की शक्ति से, सत श्रीमत से, बुद्धि साफ होने से, हम उनको राइट वे में सामना कर सकते हैं। अगर मेरी सत्व गुण की स्थिति नहीं है तो मेरी बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं। सत बुद्धि हो, श्रीमत के अनुकूल हो। आप वहाँ पर खड़े होकर फिर अपना जो कुछ विघ्न आवे उसके सत-असत की तुलना करके फिर जज करो। उस सत्व गुण में रहने से जो कभी बुद्धि में रजो तमो के अवगुण आते हैं, वह पहले पीछे हटें फिर जो स्वयं के संस्कार बहुत मेहनत कराते हैं, वह भी ठण्डे हो जायेंगे इसलिए बाबा ने हमें लक्ष्य दिया है हम सो देवता हूँ। तो सवेरे से रात तक देखो मैं अपने को देवताई लाइन में लिये जा रहा हूँ? देवता-पन की क्वालिफिकेशन इमर्ज होती जाती हैं। देवता माना ही सत्व गुण। सत्वगुण आते हैं श्रीमत से। पहले तो अपने को शीतल करो। शीतल बनने से आवेश, जोश के संस्कार शीतल हो जायेंगे, फिर नशा रखो हम किस अथॉरिटी के बच्चे हैं। जब यह नशा है तो बुद्धि सदैव ऊपर में रहती है। दूसरी बातों में नहीं जाती। चाहे कोई भी सामने आये हमारी बुद्धि देह, देह के व्यवहार तरफ नहीं जाती।

7) अपने को सदैव वेरी-वेरी लक्की समझो। वेरी लक्की समझने से विघ्न सहज ही विनाश कर सकेंगे। पता नहीं मेरी तकदीर में क्या है! ऐसा संकल्प उठाना माना संशय। मालूम नहीं - चल सकूंगा या नहीं, जाता हूँ ब्राह्मण परिवार में तो यह टक्कर आता, दुनिया में जाता तो यह विघ्न आते। आखिर क्या करूं! यह संकल्प भी संशय की निशानी है। मैं वेरी लक्की हूँ, लक्की उसको माना जाता जिसे दुनिया की अनेक ठोकरें आती। पत्थर भी पूज्यनीय तभी बनता जब पानी की अनेक चोटें खाता, इसलिए कभी किन्हीं बातों से थको नहीं। मैं हमेशा समझती कि पेपर आना माना मुझे लक्की बनाना। विघ्न आना माना भाग्यवान बनाना। अगर पेपर ही नहीं दिया तो मुझे विजयी कौन मानेगा! हजार पेपर आयें तो भी मैं 100 प्रतिशत पास रहूँ। हरेक अपना-अपना पेपर ले। पढ़ाई ही मेरा पेपर है। सारा ब्राह्मण कुल मेरा मास्टर है। कोई भी मेरे सामने आता तो बुद्धि में यही रहता कि यह मेरे से कितनी रूहानियत भरकर जायेगा। जितना उसको आत्मिक शक्ति मिलेगी, बल मिलेगा, उतना ही मुझे मार्क्स मिलेंगी। अच्छा - ओम् शान्ति।